के द्वारा इसपर नियंत्रण स्थापित किया गया। विकसित देशों में जबरदस्त आर्थिक विकास हुआ तथा प्रति व्यक्ति आय में भी भारी वृद्धि आयी है, जिसका मूल कारण औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि के करण यहाँ वाणिज्य परिवहन, नगर तथा तृतीयक रोजगार में भी वृद्धि हुई। इसके कारण रोजगार की सुविधाओं में विस्तार हुआ और अच्छे तथा उन्नत प्रतिस्पर्धी मे जीवन-स्तर की चाह के कारण दंपत्तियों का विखराव हुआ है। दूसरे शब्दों में प्रजन्नता की उच्चता रखनेवाले आयु समूहों में विखराव की प्रवृत्ति विकसित हुई है। इसका प्रभाव प्रजन्नता या जनसंख्या वृद्धि पर पड़ा है। एडम स्मिथ के अनुसार गरीबी प्रजन्नता का आधार है तथा विकसित देशों में गरीबी के अंत हो जाने के कारण प्रजननता में कमी आने से जनसंख्या वृद्धि भी कम हो गई।

गरीबी के अंत होने के तथा साथ ही साक्षरता में वृद्धि या विकास भी इसके लिए जिम्मेदार है। साक्षरता और विशेषकर महिलाओं में साक्षरता का विकास यहाँ तेजी से हुआ। फलतः महिलाओं की रोजगार सुविधाओं में विस्तार, प्रतिस्पर्धा जीवन में सम्मिलित होने से कार्यों की व्यवस्तता में वृद्धि हुई है और इसका प्रतिकूल प्रभाव प्रजननता या जन्म दर पर पड़ा है।

महिलाओं द्वारा रोजगार में व्यस्तता के कारण विकसित देशों में धीरे-धीरे परिवारिक संस्थाओं का पतन होने लगा, जिससे दंपत्तियों में बच्चों की चाह में कम आयी। इसका सीधा एवं प्रतिकूल प्रभाव जन्म दर पर पड़ा। इन संस्थाओं क पतन से विवाह जैसी संस्थाओं का पतन हुआ और व्यक्ति जीवन की प्रधानता ने समाज में गहरी पकड़ बना ली। जिससे जनसंख्या वृद्धि काफी नियंत्रित हो गई।

साक्षरता का विकास तथा परिवारिक संस्थाओं के पतन के बाद आधुनिकीकरण का भी प्रभाव यहाँ पड़ा। विवाह और बच्चे या विश्व-ग्रामण की मान्यता में विश्व-भ्रमण को ज्यादा प्राथमिकता मिली। अर्थात् भौतिकवादी जीवन-व्यवस्था को ज्यादा प्राथमिकता यहाँ मिलने लगी और परंपरागत मान्यताओं निर्णयों पर सामाजिक/धार्मिक चिंतन के बदले वैज्ञानिक चिंतन का प्रभाव होने लगा, जिससे छोटे परिवार को महत्ता मिली है।

इन कारकों के कारण विकसित देशों में जन्म दर और मृत्यु दर दोनों पर नियंत्रण स्थापित होने से कम हो गया। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव जनसंख्या वृद्धि दर की न्यूनता के रूप में सामने है। परंतु विकसित देशों के अंतर्गत भी इस स्थिति में पर्याप्त भिन्नताएँ पाई जाती हैं। इस दृष्टि से विकसित देशों के तीन वर्ग बनाए जा सकते है जहाँ जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति (1995-2000) अलग-अलग है।

1. 0.5% से अधिक वृद्धि दर वाले देश इस पहले वर्ग में शामिल है जिसे सकारात्मक वृद्धि को देश भी कहा जाता है। ऐसे देशों में संयुक्त राज्य अमेरिका कनाडा, जापान, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, इजरायल, द० कोरिया, हांगकांग, चीन, सिंगापुर, आयरलैंड, नार्वे, स्वीटजरलैंड जैसे देश शामिल हैं।

2. 0 – 0.4% वृद्धि दर वाले देश इस वर्ग में शामिल हैं ऐसे देशों में जापान, जर्मनी, बेल्जियम, डेनमार्क, फिनलैंड, फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन, स्वीडेन, यू.के जैसे देश शामिल हैं।

3. < 0 वृद्धि दर वाले देश इस वर्ग में शामिल हैं। जिसे ऋणात्मक वृद्धि वाला देश भी कहा जाता है। ऐसे देशों में बुल्गारिया, कोहशिया, अल्बानिया, चेक गणराज्य, बाल्टिक देश, हंगरी, रोमानिया एवं एलोवानिया देश शामिल हैं।

सकारात्मक वृद्धि दर वाले देशों में इस वृद्धि के अलग-अलग कारण हैं। जिसमें अधिक क्षेत्रफल एवं कृषि व्यवस्था प्रमुख है। अमेरिका और कनाडा में स्थानांतरण के प्रमुखता दी जा रही है आस्ट्रेलियां में भी स्थानान्तरण को छूट दी जा रही है। चीन, अजराइल, हांगकांग जैसे देशों में एशियाई संस्कृति का प्रभाव है।

सामान्यत: विश्व स्तर पर जनसंख्या में वार्षिक वृद्धि की गति 1.3% है। विकसित देशों में सर्वाधिक वार्षिक वृद्धि की गति इजरायल में 2.2% है। हांगकांग और इजराइल में छोड़कर किसी भी विकसित देश में वृद्धि गति 1% से अधिक नहीं है। इससे यह स्पष्ट है कि इन्होंने जनसंख्या वृद्धि पर अभूतपूर्व नियंत्रण स्थापित कर लिया है।

विकसित देशों में औद्योगिक विकास, विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार तथा प्रवास के कारण जनसंख्या में वृद्धि, काफी कम हुई है। ये सभी कारक इन देशों में एकल रूप से अथवा सम्मिलित रूप से कम वृद्धि के लिए जिम्मेदार हैं। यही नहीं, कुछ विकसित देशों के कुछ भागों में जलवायु काफी कठोर है। जिसके कारण यहाँ प्रजननता के प्रति लोग अधिक क्रियाशील नहीं है।

विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि की स्थिति सही अर्थों में विस्फोटक है। परंतु यहाँ भी वृद्धि की चार विभिन्न प्रवृत्तियाँ पायी जाती हैं–

1. अति तीव्र वृद्धि = >3%
2. तीव्र वृद्धि = 2–3%
3. सामान्य वृद्धि = 1–2%
4. निम्न वृद्धि = < 1%

(1) 3% से अधिक जनसंख्या वृद्धि वाले देशों में अंगोला, इरीट्रिय, लाइबेरिया, मेडागास्कर, नाइजर, सिएरा, लियोन, कुवैत, ओमान, सऊदी अरब, यमन, शामिल हैं। ये सभी परंपरागत मान्यताओं वाले देश हैं जिसमें मध्यपूर्व एवं अफ्रीकी देश शामिल हैं। पिछड़ी अर्थव्यवस्था एवं गरीबी के कारण यहाँ के कुछ देशों में जनसंख्या वृद्धि दर अधिक है।

(2) 2-3% जनसंख्या वृद्धि वाले देशों में अल्जीरिया बेनिन, बुर्किना, फासो, कैमरून, चाउ, कांगों, इथोपिया, गैबन, धाना, गिनी-विसाऊ, कीनिया, लेसोथो, लीबिया, मलावी, माली, मारितानिया, मोजांबिक, नामीबिया, नाइजीरिय, सूडान, रोगो, युगांडज्ञ, तंजानिया, जांबिया, अफगानिस्तान, भूटान, कंबोडिया, इराक, जोर्डन, लाओस, कुवैत, मलेशिया, नेपाल, पाकिस्तान, फिलीपींस, सीरिया, संयुक्त अरब अमीरात, बोस्निया

हर्जेगोबिना, नयू वेफलेडोनिया, पपुआ न्यूगिनी, वनातू, बेलिज, बोलीविया, कोस्टारिका, इक्वेडोर, अल-सल्वाडोर, ग्वाटेमाला, होंडूरास, निकारागुआ, परागए जैसे अफ्रीकी, एशियाई, एवं मध्य अमेरिकी देश शामिल हैं।

(3) 1–2% जनसंख्या वृद्धि दर वाले देशों में बोत्स्वाना, बुरूण्डी, मध्य अफ्रीकी गणराज्य, मिस्र, मोरक्को, दक्षिण अफ्रीका, ट्यूनीशिया, जिंबाव्वे, बांग्ला देश, भारत, इंडोनेशिया, इरान लेबनान, म्यांमार, श्रीलंका, तुर्की, अर्जेटीना, ब्राजील, चिली, कोलंबिया, हैती, पनामा, पेरू एवं वेनेजुवेला इत्यादि जैसे देश शामिल हैं। यही यह देशों का वर्ग है जिसमें भारत, दक्षिण अफ्रीका इत्यादि जैसे मुख्य विकासशील देश आते हैं। इन देशों में मृत्यु दर पर काफी हद तक नियंत्रण स्थापित किया जा चुका है तथा जन्म दर में भी गरावट की स्थिति है। जिसके कारण यहाँ जनसंख्या वृद्धि दर में कमी आई है।

(4) 1% से कम जनसंख्या वृद्धि दर वाले देशों में गिनी, मारीशस, चीनी, थाईलैंड, क्यूबा, जर्मेका, पोर्टोरिकी एवं उरुग्वें देश शामिल हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि विकासशील देशों में अधिक जनसंख्या वृद्धि या विस्फोटक स्थितिवाले देशों की भी दो वर्ग हैं।

(i) मध्य-पूर्व के देश, जहाँ इस्लामिक परंपरागत मान्यताओं के कारण जन्म दर पर नियंत्रण स्थापित नहीं किया जा सका है।

(ii) उष्ण कटिबंधीय देश, जहाँ परंपरागत मान्यताओं, गरीबी और जलवायु की विशेषता के कारण जन्म दर अधिक है।

इन दोनों ही प्रकार के देशों में महिलाओं की साक्षरत एवं रोजगार की स्थिति काफी सीमित है। काहिरा सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कार्यक्रम के अनुसार 1995-2050 ई० के मध्य सऊदी अरब में 240%, सीरिया में 223%, जौर्डन में 211% तथा ईराक में 181% जनसंख्य वृद्धि अनुमानित है। छोटे आकार के देश होने के कारण इनकी तीव्र जनसंख्या वृद्धि कोई प्रभावशाली प्रभाव विश्व जनसंख्या पर नहीं पड़ता है। और न ही पड़ेगा परंतु आंतरिक स्थिति में परिवर्तन अवश्यभावी है।

संपूर्ण दक्षिण एशिया, द० पू० एशिया, द० पू अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देश वैसे देशों में शामिल हैं जहाँ जन्म दर तीव्र है किंतु मृत्यु दर पर नियंत्रण स्थापित लगभग किया जा चुका है। यहाँ, गरीबी, भूमिहीन, बंधुआ मजदूरी, जीव-निर्वाह अर्थव्यवस्था एवं चावल की कृषि, दंपत्ति का एक साथ रहना, बाल विवाह का प्रचलन, बच्चे को ईश्वर का वरदान मानना धार्मिक अंधविश्वास, कम से कम एक पुरुष बच्चे की चाह, समाज में महिलाओं का सीमित स्थान, ग्रामीण क्षेत्रों में आलस्यता के कारण अधि कतर समय घर में व्यतीत करना, इत्यादि कुछ ऐसे कारक हैं जिनका प्रभाव जनसंख्या वृद्धि पर पड़ता है।

सामान्य जनसंख्या वृद्धि वाले देशों में राजनीति और प्रशासनिक प्रतिबद्धता का असर दिखा है। साथ कई देशों में आर्थिक विकास में तीव्रत और सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन आना है। बाल मृत्यु दर पर नियंत्रण स्थापि कर लेने से जन्म दर में यहाँ कमी आती है।

न्यून वृद्धि दर वाले देशों में अत्यंत ही पिछड़े देश तथा उच्च सामाजिक-आर्थिक मान्यताओं वाले देश आते हैं कई अफ्रीकी देशों में अभी भी उच्च जन्म दर उच्च मृत्यु दर के कारण जनसंख्या वृद्धि दर काफी कम है।

3.3.1 जनसंख्या संबंधी समस्याएँ (Problems Related to Population)

विकसित एवं विकासशील देशों की जनसंख्य वृद्धि प्ररूप में अंतर होने के कारण यहाँ जनसंख्या संबंधी समस्याएँ भी भिन्न-भिन्न हैं। एक ओर विकसित देश औद्योगीकृत एवं नगरीकृत है साथ ही अधिकांश जनसंख्या गैर-प्राथमिक या विशेषकर तृतीयक एवं अन्य कार्यो में संलग्न है उच्च जीवन स्तर एवं वृहत स्तरीय औद्योगिक उत्पादन के बावजूद यहाँ जनसंख्या संबंधी कई समस्याएँ हैं।

विकसित देशों में जन्म दर एवं मृत्यु दर पर नियंत्रण लगभग स्थापित हो जाने के कारण प्राकृतिक वृद्धि दर काफी कम है। यहाँ तक कि कई देशों में ऋणात्मक वृद्धि की प्रवृत्ति भी जारी है। परिणामस्वरूप, एक तो जनसंख्या का आकार कम है वहीं जनसंख्या के संरचनात्मक गुणों में असंतुलन की स्थिति पाई जाती है। इन देशों में छोटी उम्र के लोगों की संख्या की तुलन में वृद्ध लोगों की संख्या बढ़ने लगी है। जिससे युवा वर्ग पर अनुत्पादक वर्ग का बोझ बढ़ने लगा है। तथा भविष्य के लिए इन देशों में युवा वर्ग के कमी की आशंका है।

विकसित देशों में उच्च जीवन स्तर की चाह एवं भौतिकवादी जीवन की प्रधानता के कारण यहाँ विवाह में देरी होने लगी है। अविवाहित लोगों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। तथा विवाहित लोगों में भी परिवार के बिखराव की समस्या है। वृद्ध माता-पिता किसी आश्रम में रहते हैं संतानें पढ़ने के लिए कहीं बाहर दूसरी जगह पर रहती हैं और पति-पत्नी यदि साथ रहते भी हैं तब वे सिर्फ शाम के बाद ही घर पर एक-दूसरे से मिलते है। अर्थात् परिवार नामक संस्था में बिखराव की स्थिति पायी जाती है।

विकसित देशों में कम जनसंख्या के कारण अप्रवासियों को आकर्षित किया जाता है परंतु यहाँ आने पर नस्लभेदी समस्याएँ सामने आने लगती है। काले-गोरे का भेद-भा किया जाता है तथा उनके साथ अभद्र व्यवहार भी आजकल आम बात हो गई है। इसके कारण यहाँ के समाज में तनाव की स्थिति पाई जाती है। हाल के दिनों में आस्ट्रेलिया में भारतीयों के ऊपर हुए प्रहार या हमला इसी के उदाहरण हैं। इसके फलस्वरूप, दो देशों के बीच भी राजनीति-तनाव उत्पन्न होने लगता है।

उच्च स्तरीय साक्षरत एवं उच्च जीवन स्तर के कारण इन देशों में श्रमिकों के कमी की भारी समस्या है। कुशल श्रमिक यहाँ काफी अधिक मजदूरी या वेतन की माँग करते हैं। यही कारण है कि इन विकसित देशों के कारखानों में मशीनों से अधिक काम होता है। विकसित देशों की अधिकांश कंपनियों के कॉल-सेंटर विकासशील देशों में कार्यरत हैं क्योंकि यहाँ कम वेतन पर काम करनेवाले कुशल श्रमिक या विशेषज्ञ उपलब्ध हैं।